Peer Reviewed/ Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 08th Feb. 2019, Revised on 10th Feb. 2019; Accepted 15th Feb. 2019

आलेख

वर्तमान वैश्विक समस्याएँ एवं भारतीय संस्कृति में समाधान

*** डॉ. रामावतार**
सहायक प्राध्यापक, (शिक्षा संकाय)
उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) सरदारशहर (चूरू) राज.
Email - ramawatargodara@gmail.com, Mob. 93514046609

मुख्य शब्द : सभ्यता, चिन्तन, व्यवहार, संस्कृति, पर्यावरण, विचारधारा, राजनीतिक दर्शन, वैश्विक समस्याएँ, भौतिकवाद आदि।

सारांश

मानव सभ्यता के विकास–क्रम में मानव ने सदैव प्रगतिवादी विचारधारा को महत्त्व दिया है, परन्तु मानवीय चिन्तन में देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुसार सदैव ही परिवर्तन देखने को मिले हैं। मानव समाज में चिन्तन का महत्त्व अति गौण एवं नगण्य था, धीरे–धीरे मानवीय सभ्यता के विकास का क्रम प्रारम्भ होने लगा। मानव ने अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए नवीन एवं सुलभ प्रयास खोजने प्रारम्भ कर दिये। धीरे–धीरे मानव के चिन्तन और व्यवहार में सत्ता और सम्प्रभुता की विचारधारा ने घर करना प्रारम्भ कर दिया और इसका परिणाम यह हुआ कि आज भू–मण्डल पर अनेक राष्ट्र हमारे समक्ष विद्यमान हैं। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता सम्पूर्ण विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता मानी जाती है। भारत–भूमि महान् ऋषि–मुनियों और तपस्वियों की पावन भूमि के रूप में सदैव विश्व परिदृश्य में पहचानी जाती रही है। भारत के प्राचीन ग्रंथों और साहित्य के माध्यम से मनस्वियों ने समस्त जगत को संतुलित जीवन के सम्पूर्ण आधार प्रदान किये हैं। भारत की भूमिका सदैव जगत्गुरू की रही है। वर्तमान समय में भी विश्व के अनेक राष्ट्र भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं जीवनशैली का अनुसरण करते हैं। पर्यावरण सुरक्षा, आर्थिक विषमता को दूर करने और विश्व शान्ति के लिए भारत अपनी संस्कृति एवं परम्परा के अनुरूप विश्व को समाधान के मॉडल प्रस्तुत कर रहा है, संयुक्त राष्ट्र के सर्वोच्च पर्यावरण पुरस्कार व सोल शान्ति पुरस्कार के रूप में उसे दुनिया की स्वीकृति एवं सम्मान मिल रहा है। भारतीय संस्कृति की प्राचीन शरणागत को अभय प्रदान करने वाली महान् विचारधारा एवं उच्च राजनीतिक दर्शन के अनुसरण द्वारा समस्त राष्ट्रों के मध्य मधुर सम्बन्धों को स्थापित किया जा सकता है। सभी देशों में पारस्परिक सहयोग और सद्भाव को बढ़ाया जा सकता है। प्राणियों के प्रति दया और करुणा की भारतीय परम्परा के अनुसरण के द्वारा वैश्विक सौहार्द्र की भावना को विकसित किया जा सकता है। सत्य और अहिंसा के महान् सिद्धान्तों के मार्ग पर चलकर सम्पूर्ण विश्व को मानवता के कल्याण का मार्ग प्राप्त हो सकता है।

वर्तमान विश्व की स्थिति पर यदि दृष्टिपात करें तो आज हमें चारों और बहुत सी विषमतायें दिखायी देती हैं। मानव सभ्यता के विकास–क्रम में मानव ने सदैव प्रगतिवादी विचारधारा को महत्त्व दिया है, परन्तु मानवीय चिन्तन में देश, काल एवं परिस्थितियों के आयाम सदैव ही परिवर्तन देखने को मिले हैं। आदिम काल पर यदि हम विचार करें तो मानवीय जीवन केवल अपनी भोजन, आवास एवं सुरक्षा से संबंधित आवश्यकताओं तक ही सीमित था। मानव समाज में चिन्तन का महत्त्व अति गौण एवं नगण्य था, परन्तु धीरे–धीरे मानवीय सभ्यता के विकास का क्रम प्रारम्भ होने लगा। मानव ने अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए नवीन एवं सुलभ प्रयास खोजने प्रारम्भ कर दिये। अपनी सूझ–बूझ और अन्तर्दृष्टि का बोध मनुष्य को होना प्रारम्भ हो गया। अग्नि एवं पहिए का आविष्कार इसका ज्वलंत उदाहरण है। इन आविष्कारों के परिणामस्वरूप मानव में भौतिकवाद एवं सरल तकनीकी को अपनाने की लालसा प्रबल होने लगी। मनुष्य में धीरे–धीरे सामाजिकता की भावना पनपने लगी और समूहों का निर्माण हुआ। मानव ने अपनी आवश्यकताओं और सुरक्षा, के लिए समाज का निर्माण किया तथा समूहों में रहना प्रारम्भ कर दिया। इसके साथ ही मानवीय सभ्यता

एवं संस्कृति का प्रादुर्भाव होना प्रारम्भ हो गया, अन्य शब्दों में कहें तो मानवीय सभ्यता एवं संस्कृति के विकास ने अब गति प्राप्त कर ली थी। मानवीय सभ्यता एवं संस्कृति के उन्नयन के साथ उसका दूसरा पक्ष भी पनपने लगा, जो उसका नकारात्मक पक्ष माना जाता है। वह दूसरा पक्ष था, सामाजिक संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होना। मानव समूहों में अब एक दूसरे से अधिक समर्थ एवं सक्षम बनने की होड़ तथा संघर्षों को प्रेरणा मिली। संघर्षों एवं एक–दूसरे पर अधिपत्य की भावना का विकास होना प्रारम्भ हो गया। कबीले और बस्तियाँ बनने के पश्चात उनमें पारस्परिक सहयोग और संघर्ष का दौर प्रारम्भ हो गया। समूहों के बीच इस प्रकार के दोहरे व्यवहार के परिणामस्वरूप समूहों का आकार एवं शक्ति बढ़ने लगी तथा इन समूहों के बीच टकराव व संघर्ष ने भी विस्तृत रूप लेना शुरू कर दिया। धीरे–धीरे मानव के चिन्तन और व्यवहार में सत्ता और सम्प्रभुता की विचारधारा ने घर करना प्रारम्भ कर दिया और इसका परिणाम यह हुआ कि आज भू–मण्डल पर अनेक राष्ट्र हमारे समक्ष विद्यमान हैं। विभिन्न राष्ट्रों की परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप ही उनकी अपनी सभ्यता एवं सांस्कृतिक वातावरण आज उनमें देखने को मिलता है। प्रारम्भ में मानव की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति और अन्य गतिविधियों के साथ ही चिन्तन विकसित हुआ, जिसके कारण मानव समाज को निर्देशित करने वाली विचारधारा 'दर्शन' का उद्‌भव हुआ। यह दर्शन उस समाज अथवा राष्ट्र की तत्कालीन परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुसार ही उदित हुआ। इसके अन्तर्गत हमें ऐतिहासिक दृष्टि के आधार पर विभेद देखने को मिलता है। वर्तमान समय पर यदि हम विचार करें तो यह स्पष्ट होता है, कि किसी भी समाज अथवा राष्ट्र के मनुष्यों की जीवन शैली, आचार–विचार एवं परम्पराएँ उनके प्राचीन इतिहास और दर्शन का ही परिणाम है। यह अन्तर हमें आज पूरब और पश्चिम के रूप में देखने को मिलता है। दोनों ही विचारधाराओं में यह अन्तर विकास के कालक्रम के अनुसार स्वतः ही प्रकट हुआ है। परन्तु इस बात को नकारा नहीं जा सकता, कि किसी भी राष्ट्र की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति के कारण उसका वर्तमान प्रभावित होता है। वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व अनेक समस्याओं का सामना कर रहा है, जो मानव–जाति के लिए बहुत बड़ा खतरा बनी हुई हैं। वर्तमान वैश्विक समस्याओं को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है –

(1) पर्यावरणीय अथवा पारिथितिकीय समस्या : पर्यावरणीय समस्याओं में ऑजोन छिद्र, हरित गृह प्रभाव, औद्योगिक अपशिष्ट का निस्तारण, पर्यावरणीय आपदाएँ आदि शामिल हैं। इसके साथ ऊर्जा संकट, अंतरिक्ष के प्रदूषण की समस्या, बढ़ती जनसंख्या के साथ जल संकट आदि समस्यायें भयावह रूप धारण कर रही हैं। वैश्विक तपन का सबसे भयंकर दुष्परिणाम है, वायुमण्डल का निरन्तर गर्म हो जाना। 19वीं सदी के मध्य से लेकर वर्तमान तक पृथ्वी के ताप में 0.5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो गई है। वैश्विक तपन के कारण सूखा, वनों का समाप्त होना, जमीन में दरारें पड़ना, ध्रुवों की बर्फ पिघलकर समुद्री जलस्तर का बढ़ना आदि भयावह समस्याएँ उत्पन्न हो रही है।

(2) आर्थिक समस्या : संसाधनों, स्थायी विकास एवं लाभों का पुनः वितरण इत्यादि समस्यायें, बेरोजगारी तथा पूँजी एवं श्रम के बीच निरन्तर संघर्ष की स्थिति आदि समस्याएँ भी बढ़ती जा रही है। विश्व की अर्थव्यवस्था प्रगतिवादी के स्थान पर भौतिकवादी हो गयी है। विश्व बैंक की परिभाषा के अनुसार प्रतिदिन 1 डॉलर से कम पर जीवन निर्वाह करने वाले लोग अत्यन्त निर्धनता के दायरे में आते हैं। 2001 के आँकड़ों के अनुसार 1 डॉलर से कम पर जीवन निर्वाह करने वाले लोगों का प्रतिशत 21 था, जो 1990 के 28 प्रतिशत से काफी सुधारात्मक माना जाता है। परन्तु बहुत से क्षेत्रों में स्थिति आज भी चिन्ताजनक है। विश्व बैंक के अनुसार लगभग 35 प्रतिशत आबादी गरीबी की रेखा से नीचे जीवन निर्वाह कर रही है। 2001 के आँकड़ों के अनुसार अफ्रिका में 46 प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा के नीचे जीवनयापन कर रहे हैं। इसी प्रकार की स्थिति विश्व के बहुत से देशों में देखने को मिलती है, जो वैश्विक आर्थिक समानता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है।

(3) राजनैतिक समस्या : वर्तमान में विश्व में राजनैतिक संकट की स्थिति भी उत्पन्न हो रही है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पारस्परिक समझ की कमी, निम्न स्तरीय विदेश नीतियाँ, नस्लीय संघर्ष एवं आतंकवाद की समस्या लगातार वैश्विक विकास में बाधा उत्पन्न कर रही है। राष्ट्रों के मध्य पारस्परिक सम्बन्धों का प्रभाव प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से विश्व के समस्त राष्ट्रों पर पड़ता है। राष्ट्रों के आपसी संघर्ष के कारण विश्व में एक तनाव का वातावरण उत्पन्न होता जा रहा है, जिसके दो ज्वलंत उदारहरण विश्वयुद्धों के रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत हो चुके हैं। भारत, पाकिस्तान, अमेरिका, चीन, रूस, इजराइल, फिलीस्तीन, जर्मनी, इटली, फ्राँस, ब्रिटेन, अफ्रिका के अन्य देश तथा विश्व के छोटे–छोटे देशों के बीच सम्बन्धों के कारण विश्वशान्ति की स्थिति प्रभावित होती है।

(4) शास्त्रों की समस्याः विश्व के राष्ट्रों में शस्त्रों की शक्ति का प्रदर्शन एवं उनमें विस्तार भी आज वैश्विक संघर्ष एवं अराजकता को बढ़ावा दे रहे हैं। परमाणु एवं जैविक हथियारों की होड़ आज मानव जाति के लिए सबसे बड़ा संकट बन रही है। इसके कारण पारिस्थिकी तन्त्र का विनाश होता जा रहा है।

(5) स्वास्थ्य की समस्या; वैश्विक जनसंख्या में वृद्धि के कारण उपलब्ध संसाधनों की आपूर्ति प्रभावित हाती है। भौतिकवाद एवं अन्धानुकरण की प्रतिस्पर्द्धा से सम्पूर्ण विश्व के स्वास्थ्य में गिरावट आ रही है। विज्ञान की प्रगति एवं आविष्कारों की आड़ में विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य प्रतिकूलताएँ पनप रही हैं। विभिन्न प्रकार की भयावह बिमारियाँ निरन्तर बढ़ रही हैं। व्यस्त जीवन–शैली के कारण भी लोग स्वास्थ्य के प्रति उदासीन हो रहे हैं।

(6) सामाजिक पतन की समस्या : आज विश्व में व्यक्ति के व्यक्ति से सम्बन्धों में लगातार गिरावट आ रही है। भौतिकवाद की भावना ने लोगों को यन्त्रवत् बना दिया है। मानव की सोच एवं रूचि, अभिवृत्तियाँ तथा आचरण मूल्य विहीन होते जा रहे हैं। आध्यात्मिक पतन, व्याभिचार, भ्रष्टाचार, कुसमायोजन इत्यादि समस्याएँ आज समाज में पनपने लगी हैं। पारिवारिक संस्थाएँ टूटने लगी हैं, जिसके कारण संस्कार समाप्त हो रहे हैं, और समाज में विभिन्न प्रकार की प्रतिकूलताएँ उत्पन्न होने लगी हैं।

(7) आतंकवाद : आज सम्पूर्ण विश्व के समक्ष आतंकवाद एक विकट समस्या बनकर खड़ा है। जिससे निपटने के लिए समस्त राष्ट्र अपने–अपने तरीकों एवं नीतियों के आधार पर प्रयास कर रहे हैं। आतंकवाद के जहर के कारण समस्त विश्व में भय एवं अराजकता का वातावरण उत्पन्न हो रहा है। आतंकवाद के बहुत से कारण हैं, जिनमें आयुध सामग्री की प्रतिस्पर्द्धा, बढ़ती आबादी, सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक विषमता, प्रशासन के प्रति असंतुष्टि, अशिक्षा, आपराधिक प्रवृत्तियाँ इत्यादि। आतंकवाद के कारण सामाजिक एवं राजनैतिक प्रणाली को आघात पहुँचता है। आतंकवाद का दुष्प्रभाव सबसे अधिक सामाजिक स्तर पर नागरिकों पर पड़ता है, जिससे सामान्य जन–जीवन प्रभावित होता है तथा राष्ट्रों की प्रगति का मार्ग अवरुद्ध होता है।

भारतीय संस्कृति का परिचय :–भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता सम्पूर्ण विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता मानी जाती है। भारत–भूमि महान् ऋषि–मुनियों और तपस्वियों की पावन भूमि के रूप में सदैव विश्व परिदृश्य में पहचानी जाती रही है। भारत के प्राचीन ग्रंथों और साहित्य के माध्यम से मनस्वियों ने समस्त जगत को संतुलित जीवन के सम्पूर्ण आधार प्रदान किये हैं। भारत की भूमिका सदैव जगत्गुरू की रही है। वर्तमान समय में भी विश्व के अनेक राष्ट्र भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं जीवनशैली का अनुसरण करते हैं। विश्व के राष्ट्रों ने भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत समस्त समस्याओं का समाधान प्राप्त करने के सदैव प्रयास किये हैं तथा कर रहे हैं। आज विश्व के अनेक राष्ट्र भौतिकवाद के इस दौर में भारतीय सभ्यता और संस्कृति के माध्यम से शान्ति, सद्भाव एवं समायोजन का मार्ग तलाशने में हर सम्भव प्रयास कर रहे हैं। सम्पूर्ण विश्व आज भारतीय संस्कृति की निम्न विशेषताओं के कारण उसका अनुसरण करने की इच्छा रखते हैं–

(1) प्राचीनताः–भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व उत्तरी भारत के बड़े भू–भाग में एक उच्च काटि की संस्कृति का विकास हो चुका था। इसी प्रकार वेदों में परिलक्षित भारतीय संस्कृति न केवल प्राचीनता का प्रमाण है, अपितु वह अध्यात्म और चिन्तन की भी श्रेष्ठ अभिव्यक्ति है। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर भारतीय संस्कृति से रोम और यूनानी संस्कृति को प्राचीन तथा मिश्र, असीरिया एवं बेबीलोनिया जैसी संस्कृतियों के समकालीन माना गया है, परन्तु भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति आज भी अपना अस्तित्त्व बनाये हुए है। विश्व की बड़ी से बड़ी सभ्यता एवं संस्कृतियाँ आज अपना अस्तित्त्व खो चुकी हैं, इसके विपरीत भारतीय संस्कृति आज भी वैश्विक प्रेरणा का स्त्रोत बनी हुई है।

(2) लचीलापन एवं सहिष्णुताः–भारतीय संस्कृति की सहिष्णु प्रकृति ने दीर्घायु और स्थायित्त्व प्रदान किया है। संसार की किसी भी संस्कृति में शायद ही इतनी सहनशीलता हो जितनी भारतीय संस्कृति में पायी जाती है। प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रतीक हिन्दू धर्म को धर्म न कहकर मूल्यों पर आधारित एक जीवनशैली की संज्ञा दी गयी है। हिन्दू का अभिप्राय किसी धर्म विशेष के अनुयायी से न लगाकर भारतीयता से लगाया जाता है। भारतीय संस्कृति के लचीलेपन के स्वरूप में जब भी जड़ता की स्थिति निर्मित हुई तब किसी न किसी महापुरुष ने इसे गतिशीलता प्रदान कर इसकी सहिष्णुता को आभा से मण्डित कर दिया।

(3) ग्रहणशीलताः–भारतीय संस्कृति की सहिष्णुता और उदारता के कारण इसमें ग्रहशीलता की प्रवृत्ति विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ। भारत में इस्लामी संस्कृति का आगमन भी अरबों, तुर्कों और मुगलों के माध्यम से हुआ। इसके बावजूद भारतीय संस्कृति का

अस्तित्त्व बना रहा और नवागत संस्कृतियों से कुछ अच्छी बातें ग्रहण करने में भारतीय संस्कृति ने संकोच नहीं किया। इसी प्रकार यूरोपिय जातियों के आने और ब्रिटिश साम्राज्य के कारण भारत में विकसित हुई ईसाई संस्कृति पर भी लागू है। सम्भवतः इसिलिए उनके सामाजिक परिवेश और सांस्कृतिक आचरण में कोई परिवर्तन नहीं हो पाया, और भारतीयता ही उनकी पहचान बन गई।

(4) आध्यात्मिकता और भौतिकता में समन्वय :–भारतीय संस्कृति में आश्रम व्यवस्था के साथ ही धर्म, अर्थ काम और मोक्ष जैसे पुरुषार्थों का विशेष महत्त्व है। इन पुरुषार्थों ने ही भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता और भौतिकवाद में एक अद्‌भुत समन्वय स्थापित कर दिया। इस प्रकार भारतीय संस्कृति में धर्म और मोक्ष, आध्यात्मिक संदेश एवं अर्थ और काम की भौतिक अनिवार्यता परस्पर सम्बद्ध है। आध्यात्मिकता और भौतिकता के इस समन्वय में भारतीय संस्कृति की वह विशिष्ट अवधारणा परिलक्षित होती है, जो मनुष्य के इस लोक और परलोक को सुखी बनाने के लिए भारतीय मनीषियों ने निर्मित की थी।

(5) अनेकता में एकता:–भौगोलिक दृष्टि से भारत विविधताओं का देश है फिर भी सांस्कृतिक रूप से एक इकाई के रूप में इसका अस्तित्त्व प्राचीनकाल से बना हुआ है। उत्तर में हिमालय, दक्षिण में समुद्र, उत्तर–पश्चिम में रेगिस्तान आदि भौगोलिक विविधताओं के बावजूद इसकी सांस्कृतिक एकता अनूठी है। विभिन्न प्रकार के धर्म, जाति, सम्प्रदाय और भाषा तथा वेशभूषा को अपनाने के बावजूद भारतीय संस्कृति अपना जीवन्त रूप आज भी ग्रहण किये हुये है।

भारतीय संस्कृति में वर्तमान वैश्विक समस्याओं का समाधान :–आज विश्व के समक्ष प्रस्तुत समस्याओं का समाधान पाने में शासन, शिक्षा, विज्ञान और अन्य संगठन भरपूर प्रयास कर रहे हैं। इसी क्रम में भारतीय संस्कृति के गुणों को आत्मसात् करके वर्तमान विश्व की विभिन्न समस्याओं का निराकरण कर पाना सम्भव हो सकता है। भारतीय संस्कृति को यदि वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर क्रियान्वित किया जाये तो विश्व की बड़ी से बड़ी समस्या को समूल नष्ट किया जा सकता है। भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत प्रत्येक वैश्विक समस्या का समाधान सुगमता से निहित है। पर्यावरणीय सन्तुलन एवं पारिस्थितिकी के विषय में यदि विचार करें तो भारतीय संस्कृति के अनुसार प्राचीन वैदिक ग्रंथों और मान्यताओं की वैज्ञानिकता को महत्त्व दिया जाकर पर्यावरणीय संरक्षण द्वारा सन्तुलन स्थापित किया जा सकता है। भारतीय संस्कृति पर्यावरण संरक्षण में महत्त्वपूर्ण तथा सकारात्मक भूमिका रखती है। मानव तथा प्रकृति के बीच अटूट सम्बन्ध कायम किया जाता है, जो पूर्णतः वैज्ञानिक तथा सन्तुलित है। पर्यावरण सुरक्षा, आर्थिक विषमता को दूर करने और विश्व शान्ति के लिए भारत अपनी संस्कृति एवं परम्परा के अनुरूप विश्व को समाधान के मॉडल प्रस्तुत कर रहा है, संयुक्त राष्ट्र के सर्वोच्च पर्यावरण पुरस्कार व सोल शान्ति पुरस्कार के रूप में उसे दुनिया की स्वीकृति एवं सम्मान मिल रहा है। आज विश्व शान्ति, पर्यावरण की सुरक्षा, वैश्विक वैमनस्य की समाप्ति और आर्थिक असन्तुलन को दूर करने के लिए प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं पुरातन परम्पराओं की महत्ती भूमिका है। भारतीय संस्कृति के उदात् मूल्यों, परम्पराओं और प्राचीन जीवन पद्धति को विश्व परिदृश्य में उजागर करके वैश्विक विषमताओं और समस्याओं को दूर किया जा सकता है। भारतीय संस्कृति शरणागत को अभय प्रदान करने वाली महान् विचारधारा एवं उच्च राजनीतिक दर्शन है, इसके माध्यम से समस्त राष्ट्रों के मध्य मधुर सम्बन्धों को स्थापित किया जा सकता है। सभी देशों में पारस्परिक सहयोग और सद्‌भाव को बढ़ाया जा सकता है। प्राणियों के प्रति दया और करुणा की भारतीय परम्परा के अनुसरण के द्वारा वैश्विक सौहार्द्र की भावना को विकसित किया जा सकता है। सत्य और अहिंसा के महान् सिद्धान्तों के मार्ग पर चलकर सम्पूर्ण विश्व को मानवता के कल्याण का मार्ग प्राप्त हो सकता है।प्राचीन भारतीय योग एवं चिकित्सा पद्धति के माध्यम से वैश्विक स्वास्थ्य में निरन्तर हो रही गिरावट को दूर किया जा सकता है। भारतीय आयुर्वेद एवं चिकित्सा प्रणाली के प्रचार–प्रसार से इस विकट समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। वर्तमान समाज में निरन्तर हो रहे मूल्यों के पतन को उत्थान की ओर मोड़ा जा सकता है। सद्‌विचार और सद्‌साहित्य के द्वारा भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति विश्व को फिर से एक नवीन उन्नत मार्ग एवं जीवनशैली प्रदान करने में सक्षम हो सकती है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति ही सम्पूर्ण विश्व के लिए आज की विषम परिस्थितियों में सकारात्मक मार्गदर्शन प्रदान कर सकती है, और इसी में समस्त मानव जगत का कल्याण निहित है।

निष्कर्ष

1.मानव समाज में सूझ–बूझ और अन्तर्दृष्टि से धीरे–धीरे सभ्यता के विकास का क्रम प्रारम्भ हुआ। मानव ने अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए नवीन एवं सुलभ प्रयास खोजने प्रारम्भ कर दिये।

2. मनुष्यों में धीरे–धीरे सामाजिकता की भावना पनपने से समूहों का निर्माण हुआ।

3. मानव ने अपनी आवश्यकताओं और सुरक्षा, के लिए समाज का निर्माण किया तथा समूहों में रहना प्रारम्भ कर दिया। इसके साथ ही मानवीय सभ्यता एवं संस्कृति का प्रादुर्भाव हुआ।

4. मानवीय सभ्यता एवं संस्कृति के उन्नयन के साथ ही सामाजिक संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गई।
5. भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता सम्पूर्ण विश्व की सबसे प्राचीनत्तम संस्कृति एवं सभ्यता रही है।
6. भारत–भूमि महान् ऋषि–मुनियों और तपस्वियों की पावन भूमि के रूप में सदैव विश्व परिदृश्य में पहचानी जाती रही है।
7. भारतीय संस्कृति के वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर क्रियान्वयन किया जाये तो विश्व की बड़ी से बड़ी समस्या को समूल नष्ट किया जा सकता है।
8. प्राणियों के प्रति दया और करुणा की भारतीय परम्परा के अनुसरण के द्वारा वैश्विक सौहार्द्र की भावना को विकसित किया जा सकता है।
9. सत्य और अहिंसा का मंत्र वैश्विक मंच पर मानवता के कल्याणार्थ भारतीय संस्कृति की देन है।
10. प्राचीन भारतीय योग एवं चिकित्सा पद्धति के माध्यम से वैश्विक स्वास्थ्य में निरन्तर हो रही गिरावट को दूर किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूचीः–

1. वर्मा,लाल बहादुर (1980). यूरोप का इतिास. नई दिल्लीः प्रकाशन संस्थान.
2. चौधरी,राधाकृष्णन (1985). प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास. पटनाः भारतीय भवन.
3. गुप्ता, टी.एन. (1989). प्राचीन भारत. जयपुरः कॉलेज बुक हाऊस.
4. नागौरी, एस.एल. (1998). विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ. नई दिल्लीः सरस्वती सदन.
5. शर्मा, श्रीराम (1998). हमारी सांस्कृतिक–इतिहास के कीर्तिस्तम्भ. मथुराः अखण्ड ज्योति संस्थान.
6. व्यास, प्रकाश (1998). भारत का इतिहास एवं संस्कृति. जयपुरः पंचशील प्रकाशन.
7. संस्कृति. (2019).Inwikipedia. Retrieved April, 2,2019 from https:// hi.wikipedia.org/wiki/संस्कृति
8. भारत में धर्म का विस्तार. (2017). In Wikipedia. Retrieved January12, 2017 from http://hindi.webdunia.com...dharam/…./ भारत में धर्म का विस्तार

*** Corresponding Author:**
डॉ. रामावतार, *सहायक प्राध्यापक, (शिक्षा संकाय)*
उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) सरदारशहर (चूरू) राज.
Email - ramawatargodara@gmail.com, Mob. 93514046609